केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल , 32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)		प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1				17		
2				18		
3				19		
4				20		
5				21		
6				22		
7				23		
8				24		
9				25		
10				26		
11				27		
12				28		
13						
14						
15						
16						

A SHRIVASTAVA
V.No.1408

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अ ... ही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पद... नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | ... एवं निर्धारित मुद्रा

V.No.2...

...ishra
V.No.011236

प्रश्न क्र.

प्र.18

फ़िराक गोरखपुरी का काव्यगत प[illegible]

(i) दो रचना[illegible] 'गुले नग्मा' त[illegible] 'सत्यम शिवम सुन्दरम'।

(ii) भावपक्ष –

(i) प्र[illegible] चित्रण – फ़िराक गो[illegible] ने अपनी रचनाओं में प्रकृति क[illegible] सुन्दरता का चित्रण किया है।

(ii) रहस्यवादी [illegible]ना – इनकी रच[illegible] में रहस्यवाद का प्रयोग किया [illegible]ा है।

(iii) प्रेम और सौं[illegible]र्य – फ़िराक गोरख[illegible] की रचनाओं में प्रेम [illegible] का अनूठा संगम देखने [illegible]।

(iv) भारतीय संस्कृति का वर्णन – इन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति का वर्णन बड़े ही मनोहर ढंग से किया है।

B
S
E

3

प्रश्न क्र.

(ii) कला पक्ष -

(i) भाषा - फ़िराक ~~गोरखपु~~ गोरखपुरी की भाषा उर्दू व फारसी है। ये उर्दू के प्रचलित शायर हैं। इन्होंने संस्कृत के तत्सम, तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा सरल तथा दुरूह दोनों प्रकार की है।

(ii) शैली - फ़िराक उर्दू भाषा के शायर हैं। उर्दू में शायरी लिखी नहीं बोली जाती है। फ़िराक ने शायरी लेखन में कहने की शैली का प्रयोग किया है।

(iii) अलंकार - फ़िराक गोरखपुरी ने मुख्य रूप से उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, सांगरूपक अलंकार का प्रयोग किया है।

(iv) छन्द - फ़िराक गोरखपुरी का मुख्य छन्द 'रुबाइयाँ' है।

(iii) साहित्य में स्थान - फ़िराक गोरखपुरी का साहित्य में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने उर्दू भाषा में शायरी लिखी हैं, प्रकृति का चित्रण तथा देशभक्ति की भावना का चित्रण किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को एक दिशा प्रदान की है। हिंदी साहित्य आपकी रचनाओं एवं योगदान के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे।

BSE
www.oddyindia.com

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र. 17 मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर –

मुहावरा	लोकोक्ति
(i) मुहावरा किसी वाक्य के साथ जुड़कर अपना सम्पूर्ण अर्थ व्यक्त कर देता है।	(i) लोकोक्ति अपने आप में ही पूर्ण होती है।
(ii) मुहावरा किसी वाक्य का अंश मात्र होता है।	(ii) लोकोक्ति स्वतन्त्र वाक्य खण्ड होती है।
(iii) मुहावरे के प्रयोग से वाक्य में चमत्कार का प्रभाव उत्पन्न होता है।	(iv) लोकोक्ति के प्रयोग से वाक्य में चमत्कार उत्पन्न नहीं होता बल्कि लोकोक्ति विषय की सत्यता को स्पष्ट करती है।

प्र. 16 महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय –

(i) दो रचनाएँ – 'नीरजा', 'नीहार'।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
मध्यप्रदेश
BSE

प्रश्न क्र.

(ii) भाषा – शैली –

भाषा — महादेवी वर्मा की भाषा अत्यन्त, उत्कृष्ट, समर्थ तथा सशक्त है। इन्होंने संस्कृत प्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा को अपनाया है। इन्होंने अपनी भाषा में उर्दू, फारसी भाषा के लोकप्रचलित शब्दो को भी प्रयोग में लाया है। अपनी भाषा को चित्रों में अंकित करने तथा अर्थ को व्यक्त करने की महादेवी वर्मा के पास अद्भुत क्षमता है।

शैली — महादेवी वर्मा की शैलियाँ निम्नवत हैं —

(i) चित्रात्मक शैली,
(ii) भावात्मक शैली,
(iii) सूत्रात्मक शैली,
(iv) ~~विवे~~ विवेचनात्मक शैली एवं
(v) अलंकारिक शैली।

(iii) साहित्य में स्थान — छायावाद के चार स्तम्भों में से एक प्रमुख स्तम्भ ~~माने~~ मानी ~~जाती~~ जाने वाली लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य में प्रमुख स्थान रखती हैं। इन्होंने अपने

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

ममतामयी हृदय से लोगों को प्रेम की डोर में बाँध लिया है। ये ~~म~~ प्रसिद्ध रेखाचित्रकार हैं तथा इन्होंने हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ~~हिन्द~~ महादेवी वर्मा साहित्य में अपनी अभूतपूर्व रचनाओं के लिए सदा स्मरणीय रहेंगी।

E

प्र० 15 अथवा

"वीर रस" – उत्साह नामक स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से~~के~~ संयोग होने पर जिस रस की निष्पत्ति होती है उसे 'वीर रस' कहते हैं।

उदा. – बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.14

दो महाकाव्य व उनके रचनाकार —

महाकाव्य		रचनाकार
(i) 'रामचरितमानस'	–	गोस्वामी तुलसीदास,
(ii) 'पद्मावत'	–	मलिक मोहम्मद जायसी

~~छायावाद — "जब आत्मा की छाया~~

प्र.13

छायावाद — 'जब परमात्मा की छाया आत्मा ~~पर~~ पर पड़ती है तथा जब आत्मा की छाया परमात्मा पर पड़ती है, यही छायावाद कहलाता है।" (डॉ. राजकुमार वर्मा के अनुसार)

छायावाद की दो विशेषताएँ —

(i) छंदों में नूतनता है।
(ii) हिंदी कविता में नवीनता।
(iii) छायावादी कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण किया है।

प्रश्न क्र.

प्र.12 अथवा

भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय है कि रचनाकार को अपने भावों के अनुरूप ही सरल, सहज एवं सुग्राह्य शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि अनावश्यक आडम्बरपूर्ण दुरूह शब्दावली हमारे कथ्य कथ्य के प्रभाव को कम कर देती है। अतः रचनाकार को अपने भावों के अनुरूप सरल, सुग्राह्य एवं बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

प्र.(11) का अथवा

प्र.11 उ.→ मुद्रित माध्यम के लेखन के समय ध्यान रखने योग्य आवश्यक दो बातें निम्न हैं –

(1) लेखन की भाषा सरल एवं जनसामान्य की बोलचाल की भाषा होनी चाहिए।

लेखन में व्याकरण अशुद्धियाँ नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें छपे शब्दों में स्थायित्व होता है।

मुअनजो-दड़ो की नगर नियोजन की दो विशेषताएँ :–

(i) नगर नियोजन में वास्तुकला का विशेष ध्यान रखा गया है।

(ii) नगर मनुष्यों द्वारा निर्मित टीलों पर बसा है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र.9 वाक्य शुद्ध करना —

(i) राम ने अयोध्या आ जाना।
शुद्ध– राम अयोध्या आ जाना।

(ii) ललिता एक फूलों की माला बाजार से लाई।
शुद्ध – ललिता फूलों की माला बाजार से लाई।

B

अथवा
राष्ट्रभाषा की दो विशेषताएँ —

राष्ट्रभाषा को संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त होती है।
राष्ट्रभाषा देश के बहुसंख्यक लोगों की भाषा होती है। अर्थात
बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाती है।

कहानी एवं उपन्यास में दो अंतर —

कहानी		उपन्यास
कहानी में जीवन का खण्ड चित्रण होता है।	(i)	उपन्यास में जीवन का वृहद चित्रण होता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

कहानी	उपन्यास
(ii) कहानी का आकार छोटा होता है।	(ii) उपन्यास का आकार बड़ा होता है।
(iii) इसमें पात्रों की संख्या कम होती है	(iii) इसमें पात्रों की संख्या अधिक होती है।

6

B S E

उ.) भक्तिन स्वयं को न बदलकर दूसरो को अपने अनुसार बदल देती थी। मकई का रात को बना दलिया सवेरे मट्ठे के साथ खाना, सफेद महुए की लपसी एवं ज्वार के भुने हुए भुट्टों के हरे दाने की खिचड़ी लेखिका को अनचाहे खानी पड़ती भक्तिन ने लेखिका को अपनी पसन्द का खाना खिला - खिलाकर देहातिन बना दिया था।

(i) उ.) मुअनजो - दड़ो।

(ii) उ.) 15 - 30 मिनट।

(iii) उ.) धर्मवीर भारती की।

(iv) उ.) निर्वेद।

(v) उ.) 'दुनिया रोज बनती है'।

(vi) उ.) दो पुत्र थे।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न

उ मुसीबत स "मुसीबत से बाहर आना" |

(i)-> कहानी
(ii)-> तत्सम
(iii)-> सिल्वर वैडिंग
(iv)-> डायरी
(v) हालावाद
(vi) 1936
(vii) ...ठ्ठकाल्य

उ.3
(i)-> सत्य
(ii)-> सत्य
(iii) सत्य
(iv) सत्य
(v) असत्य
(vi) असत्य

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र.2

(i) जैनेन्द्र कुमार ।

(ii) तीन ।

(iii) पाठशाला ।

(iv) वेब दुनिया ।

(v) भार ।

(vi) व्यतिरेक ।

प्र.1

(i)=) भी ।

(ii)-> 1556 ।

(iii)-> दो ।

(iv)-> अर्थालंकार ।

(v)-> भगत जी ।

(vi)=> मराठी ।

प्रश्न क्र.

प्र.19 अथवा

(i) ~~उ~~ शीर्षक -> "शौर्यभाव की विशेषता"

(ii) उ.-> राष्ट्रीयभावना में शौर्यभाव का विशिष्ट स्थान है।

(iii) उ.-> 'सुदीर्घ' का अर्थ है अच्छी (भली) तरह से विस्तृत।

संदर्भ -> प्रस्तुत पद्यांश ~~कि~~ हमारी हिन्दी भाषा भारती के आरोह के ~~पाठ~~ 'कवितावली' नामक पाठ से लिया गया है इसके रचयिता गो. तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग -> प्रस्तुत पद्यांश में कवि तुलसीदास ने अपने समाज की विपरीत स्थितियों का वर्णन किया है।

अर्थ -> कवि तुलसीदास जी कहते हैं कि उनके समय में किसान के पास खेती नहीं थी, भिखारी को भीख नहीं थी, व्यापारियों के लिए व्यापार नहीं था, नौकरी करने वालों के लिए नौकरी नहीं थी। इस प्रकार समाज में असंतोष की भावना

Oddy

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

फैले रहने के कारण लोग निकृष्टतम कार्य करने के लिए भी तत्पर हो जाते हैं। कवि कहते हैं कि लोग अपनी पेट की आग बुझाने के लिए चोरी, डकैती करने को तैयार थे व लोग अपनी पेट की आग बुझाने के लिए ~~केवल~~ अपने बेटा-बेटी तक को बेचने के लिए तत्पर थे। उस काल लोग ऊँचे-नीचे, धर्म-अधर्म सभी प्रकार के अच्छे बुरे कार्य करने के लिए तत्पर थे। तुलसीदास जी कहते हैं कि इस पेट की आग को हमारे प्रभु ~~श्री~~ श्री राम ही बुझा सकते हैं।

प्र. 21

<u>संदर्भ</u> – प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी भाषा भारती के "शिरीष के फूल" नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

<u>प्रसंग</u> – प्रस्तुत गद्यांश में लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ~~एक~~ "शिरीष के वृक्ष" की विशेषताएँ एवं गुणों की व्याख्या की है।

प्रश्न क्र.

अर्थ ⇒ लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी शिरीष के वृक्ष का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शिरीष एक अद्भुत अवधूत अर्थात सन्यासी है। वह एक सन्यासी की भाँति सांसारिक ~~सुखों से ऊपर~~ सांसारिक सुखों से ऊपर उठकर अजेयता का ~~म~~ मंत्र भर देता है तथा जीवन रस को प्राप्त करता है। वह हर विकट परिस्थित में समान रहता है उसे किसी से कोई लेना देना नहीं है। जेठ माह की तपती गर्मी, लू, आँधी, जब धरती अग्निकुण्ड की तरह आग उगल रही हो तब भी यह मस्ती से अपना जीवन जीता है शिरीष भादों की उमस को भी सहता है और ~~वह~~ हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं कि पता नहीं शिरीष अपने जीवन का रस कहाँ से खींचता जिससे यह आठों पहर (हर समय) मस्त व खुशहाल ~~बना~~ बना रहता है।

प्रश्न क्र.

प्र-22 अथवा।

~~18 सूरज कॉलोनी~~
~~राजीवनगर पन्ना (म.प्र.)~~

प्र.22

सेवा में,

नगर निगम के जलाधिकारी

विषय – जल की आपूर्ति ~~हेतु~~ हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

सविनय नम्र निवेदन है कि हमारी कॉलोनी में जल की बहुत समस्या है जल के अभाव में उत्पन्न परिस्थितियों से हम व्याकुल हैं, जल का वितरण करने वाले टैंकों की कमी के कारण जल की आपूर्ति नहीं हो पाती जिससे हमें कई समस्याएँ होती हैं।

अतः श्री मान जी से निवेदन है कि हमारी "सूरज कॉलोनी" में जल की आपूर्ति करने की महान कृपा करें।

दिनाँक –
06-02-24

आपके –
"सूरज कॉलोनी के वासी"

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्र.23 प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव –

[रूपरेखा – (i) प्रस्तावना, (ii) प्रदूषण के कारक, (iii) प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव, (iv) प्रदूषण से भविष्य में हानियाँ, (v) उपसंहार]

प्रस्तावना – आज प्रदूषण ने मानव जीवन ही नहीं बल्कि समस्त जीव जो इस पृथ्वी पर रहते हैं सबके जीवन में बड़ी विकट परिस्थितियाँ खड़ी कर दी हैं। आज प्रदूषण से विभिन्न प्रकार की बिमारियाँ, ग्लोबल वार्मिंग इत्यादि बढ़ता जा रहा है।

प्रदूषण के कारक – प्रदूषण के विभिन्न कारक जैसे – ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण ~~इत्या~~ आदि इन सभी प्रकार के प्रदूषण के कारक फैक्ट्रियाँ, रसायन, बढ़ता विकास, कारखाने, वाहनों से निकलने वाला धुँआ, मोबाइल फोन से निकलने वाला 'रेडिएशन' (Radiation) आदि हैं।

प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव – प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों की गिनती यदि की जाए तो वह हमारी सोच से भी परेय है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषण जैसे :- जल प्रदूषण, वायु

प्रश्न क्र.

प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण आदि से हमें विभिन्न प्रकार की बिमारियाँ होती हैं अर्थात ये प्रदूषण बिमारियों के कारक हैं जैसे - श्वास सम्बन्धी बीमारियाँ, नेत्र बिमारियाँ, शारीरिक ~~अस~~ अस्वस्थता आदि हैं। प्रदूषण के कारण जीव विलुप्त हो रहे हैं उनकी संख्याएँ घटती जा रही हैं।

प्रदूषण से भविष्य में हानियाँ - हमें आने वाले भविष्य में प्रदूषण की अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। भविष्य में मानव जीवन की कुसलता बड़ी ही कठिनाई है प्रदूषण के कारण ओजोन परत में छेद हो गया है जिससे सूर्य की पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी में प्रवेश करते हैं। प्रदूषण के कारण जीव विलुप्त हो रहे हैं बिमारियाँ फैल रही है तथा प्राकृतिक संकट भी बढ़ रहे हैं।

उपसंहार - प्रदूषण ने आज बड़ा ही विकराल रूप धारण कर लिया है यह ~~सब~~ सब मानव की गतिविधियों के कारण ही हो रहा है मनुष्य की गतिविधियों ने स्वयं को ही संकट में डाल दिया है। प्रदूषण से मानव जीवन बहुत अधिक प्रभावित हो रहा है। अतः हमें प्रदूषण पर थोड़ा ध्यान देना होगा।

B
S
E